IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

Impact Factor: 6.252

Volume 2, Issue 5, June 2022

भारत में ब्रिटिशकालीन शिक्षा पद्धति के परिणाम एवं शैक्षिक विद्रोह का एक अध्ययन

Rajnish Prajapati[1] and Dr. Sudha Soni[2]

Research Scholar, Department of History[1]

Government Thakur Ranmat Singh College, Rewa, Madhya Pradesh, India[1]

Professor, Department of History[2]

Government Girls P. G. College, Rewa, Madhya Pradesh, India[2]

सारांश – ब्रिटिश शासन की व्यवस्थित शिक्षा नीति के कारण शिक्षित लोगों के बौद्धिक स्तर का व्यापक विकास हुआ। इस विकास ने भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन को एक आधार प्रदान किया। क्योंकि सशक्त नागरिक ही सशक्त राष्ट्र का नवनिर्माण कर सकते हैं। जिसने भारत को स्वाधीनता के उच्चासन पर विराजमान किया। शैक्षणिक संस्थाओं में पश्चिमी विचार और विज्ञान से जो भारतीय अवगत हुए उनमें वैज्ञानिक चेतना के साथ गौरवपूर्ण जीवन जीने की भावना का उदय हुआ। धार्मिक कट्टरता शिथिल हुई और देशी की आड़म्बर युक्त सीमाओं को लांघकर दुसरे देशों में शिक्षा ग्रहण करने जा सकें। ब्रिटिश शिक्षा के कारण ही जवाहर लाल नेहरू, मोहनदास करमचन्द्र गाँधी, सुभाष चन्द्र बोस, डॉ. भीमराव अम्बेडकर जैसे विश्व ख्याति प्राप्त महापुरुषों का उदय हुआ।

मुख्य शब्द : ब्रिटिशकालीन, शिक्षा, पद्धति, परिणाम, शैक्षिक, विद्रोह आदि।

प्रस्तावना :

ब्रिटिश भारतीय शिक्षा जगत के अध्ययन से ज्ञान होता है कि अंग्रेज शिक्षा प्रेमी थे। उनका ज्ञान से गहरा लगाव था। वे अनुसंधान, साहित्य सृजन और अध्ययन–अध्यापन के शौकीन थे। इसीलिए उन्होंने भारत की रीति, नीति, भाषा, कानून, साहित्य, संस्कृति और धार्मिक अध्ययन हेतु व्यवस्था बनाने में रूचि दिखाई। भारत में विजय पताका फहराने के साथ ही ब्रिटेन में भारतीय व्यवस्था को लेकर अनुसंधान भी चल रहा था। जिसके अगुआ लार्ड मैकाले थे। जिन्होंने इंग्लैण्ड में बोर्ड ऑफ कंट्रोल के कमिश्नर पद पर रहते हुए भारत के इतिहास भूगोल, धर्म, भाषा, कला, संस्कृति का गहरा अध्ययन किया था।

ब्रिटिश काल में भारत वर्ष के ज्ञान के उद्देश्यों में बहुत से परिवर्तन आये। अंग्रेज अपने शासन को व्यवस्थित करने के लिये शिक्षा का सहारा लिया। ब्रिटिश कालीन शिक्षा के लक्ष्य को संक्षेप में अन्य प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है–

1. भारतीय ज्ञान जगत में यूरोपीय साहित्य और विज्ञान का प्रसार करना– मैकाले तथा कुछ अंग्रेज अधिकारी–कार्मचारियों के अनुसार प्राचीन भारतीय शिक्षा अत्यंत अविकसित थी। और उसमें वैज्ञानिक ज्ञान, अनुसंधान तथा तकनीकि साहित्य का अभाव था। इसी कारण ब्रिटिश काल में अंग्रेजी शिक्षा का पूर्ण उद्देश्य भारत में यूरोपीय ज्ञान, साहित्य और विज्ञान का प्रसार करना था।
2. भारतीयों का बौद्धिक और नैतिक विकास करना– ब्रिटिशकालीन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य भारतीयों का बौद्धिक तथा नैतिक विकास करना था। लार्ड मैकाले के द्वारा 1835 में जारी विवरण पत्र और चाल्स वुड के 1854 के घोषणा पत्र से स्पष्ट है कि अंग्रेजी शिक्षा द्वारा भारत में रहने वाले व्यक्तियों को बौद्धिक, नैतिक, खोजात्मक शिक्षा प्रदान करना अत्यधिक महत्वपूर्ण माना गया।
3. भारत नागरिकों को प्रशासनिक दृष्टि से शासन की सहायता के लिये प्रशिक्षित करना– मैकाले के अनुसार ब्रिटिश भाषा में शिक्षित भारतीय लाखों अशिक्षित व्यक्तियों के बीच संवाद का कार्य कर सकें। एक ऐसा वर्ग जो रूचि, नैतिकता और

DOI: 10.48175/IJARSCT-4836

IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

Volume 2, Issue 5, June 2022

Impact Factor: 6.252

बुद्धि में तो अंग्रेज हो परन्तु रूप–रंग में भारतीय हो। इस प्रकार मैकाले पाश्चात्य भारत पर अंग्रेजों के शासन को सुदृढ़ एक वर्ग तैयार करना था जो उनके तथा उनके द्वारा शासित करना चाहता था।

4. भारतीयों का आर्थिक विकास करना– 19 वीं शताब्दी में हुई औद्योगिक क्रांति से सम्पूर्ण विश्व की आर्थिक व्यवस्था में परिवर्तन हो गया था। औद्योगिक क्रांति के परिणाम स्वरूप अंग्रेजों ने भारत में अनेक उद्योग धंधों की स्थापना की और भारत से कच्चे माल को भी इंग्लैण्ड ले जाने लगे। इससे भारत में आर्थिक विकास हुआ। लेकिन इंग्लैण्ड से आदान–प्रदान लिये अंगेजी भाषा के जानकार व्यक्तियों की जरूरत थी इसलिए ब्रिटिश कालीन शिक्षा अनिवार्य थी।
5. ब्रिटिश कालीन शैक्षिक पाठ्यक्रम– ब्रिटिश ज्ञान में अंग्रेजी साहित्य तथा विज्ञान, अनुसंधान को शीर्ष स्थान प्राप्त था। साथ ही इतिहास, भूगोल, गणित, सामाजिक विज्ञान आदि विषयों का ज्ञान अनिवार्य था। छन्नीकरण का सिद्धांत भारतीय सामाजिक की मॉग थी जिसे ब्रिटिश शासकों ने स्वीकार किया।
6. अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव– भारत में लगभग दो सौ वर्षों तक अंग्रेजों का राज रहा। अंग्रेज व्यापारी के तौर पर भारत में प्रवेश हुये थे। किन्तु अपने साथ एक व्यवस्थित शिक्षा पद्धति भारत लाये थे। ब्रिटिश शिक्षा को अर्जित करके भारतीयों की सोच में व्यापक परिवर्तन हुआ। भारत में व्यवस्थित ज्ञान के आदान–प्रदान का प्रारम्भ ईसाई मिशनरियों ने किया था। मिशनरियों के शिक्षा प्रसार के कार्य में ईस्ट इंडिया ने सहयोग किया था। आधुनिक काल में विश्व विद्यालयीन महाविद्यालयीन शिक्षा ब्रिटिश शिक्षा की महत्वपूर्ण देन है।

ब्रिटिश काल तक आते–आते प्राचीन स्वार्थ परायणता का समय अब बहुत कुछ परिवर्तित हो गया। सभ्य ब्रिटिश सरकार ने अधीनस्थ देशी रजवाड़ों के भावी नरेशों की शिक्षा–दीक्षा के लिये अजमेर आदि नगरों में चीफ्स कालेजों की स्थापना भी कर दी है। इन कॉलेजों से शिक्षा प्राप्त कर युवा नरेशों की कर्तव्य निष्ठा कहाँ तक बढ़ती है, इस विषय का उल्लेख करना बड़े साहस का काम है। हमारी समझ में देशी नरेशों की शिक्षा–दीक्षा के लिये जब तक देशी ढंग के विद्यालय की प्रतिष्ठा नहीं होती, तब तक भावी युवा नरेशों के चरित्र संगठन में पूर्णता आने की बहुत कम आशा है।

ब्रिटिशकालीन देशी शिक्षा पद्धति के परिणाम

1. अंग्रेजी भाषा की शिक्षा के फैलते ही पश्चिमी सभ्यता भी धीरे–धीरे भारतीय समाज को प्रभावित करने लगी। पश्चिमी प्रभाव से व्यक्तिवाद पर अधिक जोर देने से हमारे सामाजिक बंधन ढीले पड़ गये। इससे हमारी संयुक्त परिवार प्रणाली व जाति व्यवस्था प्रभावित हुई।
2. कुछ अंशों में पाश्चात्य विचारों का प्रभाव हमारे लिए लाभप्रद ही हुआ। इससे हमारी सामाजिक कुरीतियों और कुप्रथाओं के निवारण में सहायता मिली। अंधविश्वास और श्रृद्धा का स्थान बुद्धि और तर्क ने ले लिया। जिससे भारतीयों में अनुसंधान की भावना प्रबल हुई। प्रत्येक वर्ग को शिक्षा का अवसर मिलने के कारण समाजिक गतिशीलता को गति मिली, यही गतिशीलता सामाजिक परिवर्तन की ओर उन्मुख है।
3. वैज्ञानिक अन्वेषण एवं अनुसंधान की भावना हममें पश्चिम के प्रभाव के कारण विकसित हुई। ''जब हम पश्चिम के सम्पर्क में आये तो यह अनुभव किया कि पश्चिम की अभूतपूर्व उन्नति का प्रमुख कारण विज्ञान एवं वैज्ञानिक अन्वेषण है।'' तब भारतीय ब्रिटिश शिक्षा की ओर उन्मुख हुए इसी का परिणाम सरस्वती शिशु मंदिर के रूप में हम सबके सामने आया। यह भारत की निजी क्षेत्र की सबसे बड़ी शैक्षणिक संस्था है। जिसमें आवश्क ज्ञान के साथ सनातन संस्कृति को प्रसारित करने का कार्य किया जाता है।

4. अंग्रेजी शिक्षा ने वैज्ञानिक अन्वेषण एवं अनुसंधान की भावना विकसित की और वैज्ञानिक प्रयोग की प्रणाली भारतीयों को प्रदान की। ''इसके परिणामस्वरूप देशी शैक्षिक संस्थानों और विश्वविद्यालयों में वैज्ञानिक विषयों के शिक्षण और परीक्षण की समुचित व्यवस्था विकसित हुई।''
5. एस. के. विश्वास कहते हैं कि ''भारत देश की संस्कृति इतिहास लेखन विरुद्ध संस्कृति है। भारतवर्ष की संस्कृति वास्तव में निरक्षरता और इतिहास के प्रति अज्ञानता की संस्कृति है। ब्राह्मण शिक्षाविदों की संस्कृति, शिक्षा सकोचन की संस्कृति है। इस वजह से बींसवी शदी के पहले अर्थात् अंग्रेजों द्वारा प्रसार बाध्यतामूलक किये जाने के पूर्व ब्राह्मणवादी भारत में साक्षर व्यक्तियों की संस्था दो प्रतिशत से अधिक कभी नहीं हो सकी। विद्या, शिक्षा, पुस्तकादि रचना में भारतीय उदासीनता जग जाहिर है। विद्यानुशीलन यदि कुछ भारत में हुआ भी है। तो वह धर्माधारित है।
6. भीमराव अम्बेडकर कहते हैं कि अवसर की स्वतंत्रता न देना, ज्ञानार्जन की स्वतंत्रता न देना, हथियार के उपयोग का अधिकार न देना हारे हुये मनुष्य के साथ सबसे बड़ी निर्दयता है।
7. बिना शिक्षण के अधिकार के कोई भी राज्य कल्याणकारी राज्य नहीं बन सकता। इसीलिए स्वतंत्र भारतीय विधान में शिक्षा को समवर्ती सूची और राज्य के नीति निर्देशक तत्वों में रखा गया है।
8. वास्तव में शिक्षा मानव की एक मूल आवश्यकता है। मनुष्य को मुनष्य बनने के लिए शिक्षा आवश्यक है। इसी शिक्षा के बल पर ही मुनष्य विकास के छोर पर पहुँच सकता है।
9. विश्व के विकसित देशों में शिक्षा की अनगिनत सुविधायें हैं, यही कारण है कि वहाँ के लोग बड़ी तीव्रगति से अपना विकास सुनिश्चित कर रहे हैं और जीवन के प्रत्येक क्षेत्रों में तीव्रता से आगे बढ़ रहे हैं।
10. उल्लेखनीय है कि देशवासियों की वर्ण, जाति, धार्मिक भावनाओं ने प्रायः जनसाधारण को शिक्षा के अधिकार से वंचित रखा और निर्धनता के कारण भी वे प्रायः शिक्षा ग्रहण नहीं कर सके।

लेखक ने धर्म और मोक्ष के साधन को दो नहीं स्वीकार किया। लिखा है कि धर्म और मोक्ष के दो साधन नहीं। धर्म या मोक्ष का साधन है विरत्न। मोक्ष का साक्षात् सम्बंध चरित्र से है परन्तु सम्यक दर्शन तथा ज्ञान से रहित सम्यक चरित्र मोक्ष का साधन नहीं बन सकता। ये तीनों मिलकर ही मोक्ष का साधन बनते हैं। लेखक ने उक्त पुस्तक में विरत्न क्या है? इसको इस प्रकार लिखा है–

सम्यक दर्शन– इसका अर्थ है सच्ची आस्था, हमें यथार्थ ज्ञान सच्ची आस्था के बिना नहीं प्राप्त हो सकता। अतः सम्यक दर्शन ही सम्यक दृष्टि उत्पन्न करता है। जैन दर्शन में सम्यक दर्शन को कर्णधार कहा गया है। सम्यक ज्ञान– सम्यक ज्ञान तथा सम्यक चरित्र में घनिष्ट सम्बंध है। सम्यक ज्ञान ही सम्यक चरित्र का वर्धन या पोषण करता है। जिस प्रकार सम्यक ज्ञान का सम्बंध सम्यक चरित्र से है उसी प्रकार इसका सम्बंध सम्यक दर्शन से भी है। मिथ्या दृष्टि समाप्त होने से ही सम्यक दर्शन तथा सम्यक ज्ञान दोनों की उत्पत्ति होती है।

मिथ्या ज्ञान और मिथ्या दृष्टि के कारण अंग्रेजों के काल में भी कुछ अंग्रेजी शिक्षण नीति का विरोध हुआ और अधिकतर उसको अपनाकर सुख भोग किया। जैसा कि यह सत्य सत्प्रतिशत सत्य है कि भारत में अनेकों धर्मों, जातियों, सम्प्रदायों आदि का निवास स्थान रहा है। यहाँ हर काल में ज्ञान को एक सीधे तरीके से न रखकर तर्क–वितर्क का मार्ग अपनाया गया। अंग्रेजों के जाने के बाद भी यहाँ के विभिन्न वर्ग एवं सम्प्रदाय ने अपने संकुचित स्वार्थ और लाभ के लिये धर्म के नाम पर कई शिक्षण संस्थानों को जनता के समक्ष आकर्षक शैली में प्रस्तुत किया और आज भी वो सिलसिला जारी है। व्यक्तिगत सामाजिक, आर्थिक लाभ के साथ–साथ राजनीतिक और धार्मिक समुचित एवं असमुचित दोनों प्रकार के लाभ लिये जा रहे हैं।

समय हमेशा से परिवर्तनशील रहा है। दुख और सुख मानव समाज में अपना जोर–शोर दिखाने लगा। जैन दार्शनिक श्री उमा स्वामी का कहना है– सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र ही मोक्ष के साधन हैं, ये मोक्ष के साधन धर्म कहे गए है

तथा इनके विपरीत मिथ्या दर्शन, मिथ्या ज्ञान और मिथ्या चरित्र ये संसार के मार्ग कहे गए हैं। मोक्ष मार्ग वही है जिससे मनुष्य दुख और उसके कारणों से छुटकारा पा सके यही धर्म है।

मिथ्या ज्ञान और मिथ्या दृष्टि के कारण अंग्रेजी शिक्षण का शिक्षित भारतीयों ने व्यापक विरोध किया। किंतु ब्रिटिश शिक्षा नीति के देश में लागू होते ही प्रथम वर्ण के लोगों ने ब्रिटिश शिक्षा को अंगीकार कर सुख भोग भी किया।

अंग्रेजी साहित्य और अंग्रेजी भाषा के ज्ञान के कारण ही वर्तमान में प्रदेशवासी (सेवा क्षेत्र) सर्विस सेक्टर में विश्व के कई देशों में अपना स्थान बनाने में सफल हो सके हैं। अमेरिका की कई संस्थाओं में भारतीय मूल के लोग अपना प्रमुख स्थान रखते हैं। कार्नवालिस भारत में सिविल सेवा के जन्मदाता थे। इस सेवा में 1853 ई. से प्रतियोगितात्मक परीक्षा होने लगी। यह प्रारम्भ में इंग्लैण्ड में होती थी, लेकिन 1923 ई. से यह भारत में भी होने लगी। 1863 ई. में प्रथम भारतीय सत्येन्द्र नाथ टैगोर थे। भारत में पुलिस सेवा का जन्मदाता भी लार्ड कार्नवालिस को माना जाता है।

ब्रिटिश विद्वान अलेक्जैण्डर कनिंघम के करण सर्वप्रथम 1873 ई. में मध्यप्रदेश के सतना जिले में स्थित भरहुत स्तूप दुनिया के सामने आया। जिससे मध्यप्रदेश की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनी। ब्रिटिश शिक्षा व्यवस्था की स्थापना से पूर्व भारत में हिन्दी भाषा अस्त–व्यस्त रूप में थी। न ही कोई गद्य–पुस्तक, न व्याकरण और न ही अच्छा शब्दकोष थां डॉ. गिलक्रिस्ट प्रथम यूरोपियन विद्वान थे जिन्होंने ''ए ग्रामर ऑफ द हिन्दुस्तानी लैंग्वेज'' की रचना की। आज यही हिन्दी मध्यप्रदेश की राजभाषा है। हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन के लिये जॉन अब्राहम ग्रियर्सन जाने जाते हैं। सर जेम्स प्रिन्सेप 53 विश्व के पहले विद्वान थे जिन्होंने 1837 ई. में अशोक कालीन ब्राम्ही लिपि पढ़ने में सफलता प्राप्त की। उन्होंने स्पष्ट किया कि लेख की भाषा प्राकृत है, संस्कृत नहीं। इसी के कारण मौर्य कालीन मध्यप्रदेश की पुरातात्विक विरासत देश ओर दुनिया के सामने आयी। पुरातत्वविद् जॉन मार्शल ने पाँच हजार वर्ष पूर्व सिन्धु घाटी सभ्यता का 1921 में उत्खनन कर भारत की गौरवपूर्ण शहरी सभ्यता को दुनिया के सामने रखा। यह वैज्ञानिकता से सराबोर अंग्रेजी शिक्षा का ही कमाल था। जिन्होंने भारतीय कर्मकांड, आडम्बर को दरकिनार कर भारत के समस्त बौद्धिष्ट शैक्षिक स्थलों की खोज कर दुनिया के सामने रख। जिससे भारत जगत में विश्व गुरू के नाम से जाना गया है।

भारत देश के दूसरे राज्यों की भाँति मध्यप्रदेश में भी विभिन्न प्रकार की धार्मिक, सामाजिक, कुप्रथाओं का बोलबाला था। जिनमें गंगा प्रवाह, सती प्रथा, नरबलि, ठग प्रथा, दास प्रथा आदि प्रमुख थीं। इन अमानवीय मान्यताओं, परम्पराओं का अंत प्रदेश से अंग्रेजी शिक्षा को जानने व मानने से हो सका। लार्ड कार्नवालिस भारत में सिविल सेवा के जनक थे। सिविल सेवा के माध्यम से 1853 से भारत में प्रतियोगी परीक्षा प्रारम्भ हुई और यही व्यवस्था वर्तमान मध्यप्रदेश में चल रही है।

शोध निष्कर्ष :

ब्रिटिश कालीन शैक्षणिक इतिहास से स्पष्ट हुआ कि भारत में अंग्रेजों के आगमन की इच्छा केवल व्यापारिक थी। किन्तु भारतीय जन–जीवन से अवगत होने के बाद उन्होंने भारतीय शासकों की स्वार्थ लोलुपता, सामाजिक असमानता, भारतीयों की अज्ञानता ने उन्हें महत्वकांक्षी बनाया और इसी महत्वकांक्षा के कारण अंग्रेज शासक बने और भारत गुलाम। परंतु अंग्रेज शिक्षा प्रेमी थे, उनका ज्ञान से गहरा लगाव था। वे अनुसंधान, साहित्य सृजन और अध्ययन–अध्यापन के शौकीन थे। इसीलिए उन्होंने भारत की रीति, नीति, भाषा, कानून, साहित्य, धर्म और संस्कृति के अध्ययन हेतु व्यवस्था बनाने में रूचि दिखाई। भारत में विजय पताका फहराने के साथ ही ब्रिटेन में भारतीय व्यवस्था को लेकर अनुसंधान भी चल रहा था। जिसके अगुआ लार्ड मैकाले थे। जिन्होंने इंग्लैण्ड में बोर्ड ऑफ कंट्रोल के कमिश्नर पद पर रहते हुए भारत के इतिहास, भूगोल, धर्म, भाषा, कला, संस्कृति का गहरा अध्ययन किया था।भारत में पश्चिमी शिक्षा विकसित होने के पूर्व भारतीय शासकों ने शिक्षा की जिम्मेदारी नहीं ली थी। जन–सामान्य की शिक्षा के लिये उन्होंने कोई खास व्यवस्था नहीं की थी। वे धार्मिक आधार पर शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थाओं को ही सहायता

देते थे। जो विद्यालय स्थापित किये जाते थे उनमें ज्यादातर भाषा और गणित की शिक्षा दी जाती थी। मस्जिदों और मुसलमानों द्वारा संचालित मदरसों में अरबी, फारसी का अध्यापन होता था। फारसी चूँकि उस समय की सरकारी कामकाज की और अदालत की भाषा थी। इसलिए मुसलमानों के साथ द्विज भी इसे सीखते थे। औपचारिक शिक्षा की उचित व्यवस्था न होने पर भी शिक्षा प्रदान करने के लिए घर व समाज में अनौपचारिक शिक्षा पद्धति प्रचलित थी। जिससे लोग अपने पेशे और अपनी संस्कृति से सम्बंधित शिक्षा ग्रहण करते थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

[1]. जौहरी एवं पाठक, भारतीय शिक्षा का इतिहास, विनोद पुस्तक मन्दिर अगरा, वर्ष 2009
[2]. Swami Viveananda : Lecture from Colombo toalmora, p.127
[3]. Harijan, July 31, 1937
[4]. All India National Education Conference
[5]. Hindustani Talimi Sangh : Educational Reconstruction. p.82
[6]. Zakir Husain Committee.
[7]. K.G. Saiyaidain in Year Book o Education (Evans Bros.) 1940.p.503